अवन्तिका कृषि अमृत

''त्रैमासिक कृषि तकनीकी संचार दिग्दर्शिका''

अंक - 56 | कृषि विज्ञान केन्द्र, रा.वि.सि.कृ.वि.वि, उज्जैन | जुलाई-सितम्बर 2022

संरक्षक

डॉ. एस.के. राव

कुलपति

रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.ग्वालियर

मार्गदर्शक

डॉ. वाय.पी. सिंह

संचालक विस्तार सेवाएँ

रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.ग्वालियर

*

डॉ. एस.आर.के. सिंह

निदेशक अटारी

भा.कृ.अ.परिषद, जोन-9, जबलपुर

*

प्रकाशक एवं मुख्य संपादक

डॉ. आर.पी. शर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

सह संपादक

डॉ.श्रीमती रेखा तिवारी

(गृह वैज्ञानिक)

तकनीकी सहयोग

डॉ. सुरेन्द्र कुमार कीशिक

(वैज्ञानिक पौध प्रजनन)

डॉ.दिवाकर सिंह तोमर

(सस्य वैज्ञानिक)

श्री डी.के. सूर्यवंशी

(वैज्ञानिक पौध संरक्षण)

डॉ. मोनी सिंह

(वरि. तकनीकी अधिकारी)

श्रीमती गजाला खान

(वरि. तकनीकी अधिकारी)

श्री राजेन्द्र गवली

(तकनीकी अधिकारी)

संपादकीय...

75 आजादी की अमृत महोत्सव 15 अगस्त की हार्दिक बधाईयाँ। हरित क्रांति के माध्यम से भारत द्वारा ख़ाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य प्राप्त कर पिछले दिनों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। जिसमें किसानों की भूमिका विशेष रही जैसे कि उनके द्वारा नये-नये आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकियों जैसे कि उन्नत किस्म के बीज, आधुनिक मशीनें तथा कम संसाधनों में उचित प्रबंधन आदि के अपनाने से संभव हो पाया था।

साथ ही भविष्य में भी वैज्ञानिक तकनीकियों में निरंतर अपेक्षित बदलावों की आवश्यकता है ताकि बढ़ती जनसंख्या के लिये पर्याप्त खाद्यान्न के उत्पादन के लक्ष्य को समय सीमा में प्राप्त कर सकें।

कृषि को अधिक उत्पादक बनाने और कृषक आय बढ़ाने के लक्ष्य को लेकर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत देशभर में लगभग 103 से अधिक कृषि अनुसंधान संस्थानों में कार्य किये जा रहे है। इन उन्नत कृषि प्रणालियों को प्रगतिशील किसानों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है। वैज्ञानिक खेती के प्रति बढ़ती जागरूकता भी इसी बदलाव का सूचक है।

इसी क्रम में ''स्मार्ट फार्मिंग'' एक नई अवधारणा को प्रगतिशील कृषक अपना रहे है। जिसे तीन हिस्सों में विभाजित कर सकते है। प्रबंधन सूचना प्रणाली, सटीक कृषि और स्वचालित कृषि शामिल है।

प्रगतिशील किसानों को अब जी.पी.एस., सॉयल, स्केनिंग, डेटा मैनेजमेंट तथा इंटरनेट जैसी प्रौद्यौगिकिया सुलभ है और इनके द्वारा काफी हद तक अपनी आमदनी में बढ़ोतरी कर सकते है।

आज की ग्रामीण युवा पीढ़ी भी एन्ड्राईड फोन का उपयोग बखुबी करने लगी है साथ ही कम्प्यूटर के माध्यम से नेट के समस्त जरिये जैसे की गुगल, यूट्यूब, ट्वीटर, फेसबुक तथा वॉटसेप के उपयोग करके आधुनिक तथा स्मार्ट फार्मिंग को अपने-अपने स्तर पर उपयोग करके खेती को लाभ का व्यवसाय बना रहे है।

शुभकामनाएँ सहित

डॉ. आर.पी. शर्मा

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भागीदारी

प्रथम अन्र्राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतर्गत सतत् विकास के लक्ष्य (SDGs) दिनांक 15-17 अप्रैल 2022 को दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा चित्रकूट (सतना) में आयोजित की गई। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र, रा.वि.सि.कृ.वि.वि. उज्जैन द्वारा ''जीरो हंगर'' थीम के अन्तर्गत सब्जी वाली सोयाबीन, अलसी तथा कसुरी मेथी के मूल्य संवर्धित (FSSAI Certificate मान्यता प्राप्त) उत्पाद प्रदर्शनी में लगाये गये। जिससे कि आम किसान भी अपने स्तर पर ''जीरो हंगर'' में अपना योगदान दे सकें तथा अपने कृषि उत्पाद में विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद द्वारा विपणन के अन्य स्त्रोत को अपना सकें। उक्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मा. केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर तथा डॉ. एस.आर.के. सिंह, निदेशक-अटारी, जबलपुर (जोन-09) द्वारा प्रर्शनी का अवलोकन किया गया एवं उत्पादों की तारीफ की। प्रदर्शनी कृषि विज्ञान केन्द्र को वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रेखा तिवारी द्वारा लगाई गई तथा प्रदर्शनी में उत्पादों से संबंधित तकनीकी जानकारीयुक्त पोस्टर भी लगायें गये थे। जिससे की आम किसान आसानी से समझ सकें। तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 1500 किसान भाई-बहनें तथा छात्र-छात्रायें एवं अधिकारी उपस्थिति थे।

सोया महाकुंभ : आत्म से आत्मनिर्भरता की ओर

75 वीं आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (भारतीय अनुसंधान परिषद) इंदौर द्वारा तीन दिवसीय 29-31 मई 2022 को सोया महाकुंभ 2022 का भव्य आयोजन किया गया। आत्म से आत्मनिर्भरता की ओर इस निषयन्तर्गत सोयाबीन के उत्पाद को बढ़ावा देने हेतु प्रदर्शनी भी लगाई गयी थी। कृषि विज्ञान केन्द्र (रा.वि.सि.कृ.वि.वि.) उज्जैन द्वारा सोया उत्पाद की प्रदर्शनी स्टॉल भी लगाई गयी थी ताकि किसान भाई एवं बहने सोयाबीन के उत्पाद को दैनिक आहार में शामिल कर सकें। साथ ही उन्नतशील प्रजातियों के बारे में भी विस्तार से बताया गया। कार्यक्रम में संस्था के प्रमुख डॉ. आर.पी. शर्मा, श्री राजेन्द्र गवली तथा डॉ. मोनीसिंह उपिस्थत थे। कार्यक्रम से कुल 104 किसान भाई लाभांवित हुए।

सोया महाकुंभ में संस्था द्वारा सोया उत्पाद के अन्तर्गत - सोया आटा, सोया लड्डू एवं सोयाबीन की नवीनतम् प्रजातियों को प्रदर्शनी में रखा गया।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

8 वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस दि. 21.6.2022 को डॉ. आर.पी. शर्मा संस्था प्रमुख के मार्गदर्शन में सफतापूर्वक आयोजित किया गया। इस बार के योग दिवस का थीम था ''मानवता के लिये योग'' इसका मुख्य कारण है योग लोगों को ऊर्जावान रहने एवं कोविड-19 महामारी जैसे कठिन समय के दौरान एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली रखने में सहायता कर सकता है। इसके अंतर्गत विभिन्न योग जैसे कि अनुलोम-विलोम, प्राणायाम, भुजंगासन, ताड़ासन, वृक्षासन, पर्वतासन, भ्रामरी तथा अंत में सूर्य नमस्कार किया गया। कार्यक्रम में संस्था के समस्त अधिकारी तथा कर्मचारीगण कुल 16 जन उपस्थित थे। जिसमें डॉ. एस. तोमर, डॉ. एस.के. कौशिक, डॉ. रेखा तिवारी, श्री डी.के. सूर्यवंशी, डॉ. मोनीसिंह, श्री राजेन्द्र गवली, श्रीमती रूचिता, श्रीमती सपना सिंह, श्री अजय गुप्ता तथा श्री राजेश मीणा एवं श्री बाबूलाल जी तथा रामसिंह आदि ने योगा में सहभाग लिया।

आजादी का अमृत महोत्सव @ 75

15 अगस्त 2022 को भारत की स्वतंत्रता का 75 वाँ वर्ष पूरा हो रहा है। इस अवसर पर यह आजादी का अमृत महोत्सव 75 वर्ष श्रद्धा से तथा उत्साह से पूरे भारतवर्ष में मनाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत निदेशक कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (जोन-09), जबलपुर के मार्गदर्शन में तथा डॉ. आर.पी. शर्मा, संस्था प्रमुख के देखरेख में कृषि विज्ञान केन्द्र (रा.वि.सि.कृ.वि.वि.) उज्जैन में कुल 75 कार्यक्रम पूरे वर्षभर सफलतापूर्वक आयोजित किये गये जिसमें कृषि पर आधारित विभिन्न थीम को शामिल किया गया था। जैसे कि :- जल संग्रहण, मिट्टी परीक्षण, कृषि आधारित शिक्षण, जय जवान, जय किसान, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, महिला सशक्तिकरण, स्वच्छ पर्यावरण, उद्यानिकी फसलें, नगदी फसलें, गन्ना उत्पादन, मसाला फसलें, प्राकृतिक खेती, जैविक खेती, मुर्गी पालन तथा मुर्गियों की विशेष देखभाल, उद्यानिकी में आधुनिक तकनीकियाँ, गैर पांरपरिक जलाये कृषि प्रणाली, मृदा जल और कृषि यंत्रीकरण के लिए जन जागरूकता अभियान आदि कुल 75 (राष्ट्रीय 18 तथा प्रांतीय 75) वर्चूअल ऑनलाईन मोड से कार्यक्रम संस्थागत तथा असंस्थागत आयोजित किये गये। जिसमें नोडल अधिकारी डॉ. रेखा तिवारी तथा तकनीकी सहकार्य श्रीमती गजाला खान द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में संस्था में समस्त वैज्ञानिक गण तथा कर्मचारीगण का विशेष सहयोग रहा है। डॉ. डी.एस. तोमर, डॉ. एस.के. सिंह कौशिक, डॉ. रेखा तिवारी, श्री डी.के. सूर्यवंशी, डॉ. मोनीसिंह, श्रीमती गजाला खान, श्री राजेन्द्र गवली, श्री अजल गुप्ता, श्रीमती सपना सिंह, श्रीमती रूचिता कनौजिया का विशेष योगदान रहा। साथ ही श्रीमती काजल, श्री राजेश तथा श्री बाबूलाल जी का भी विशेष योगदान रहा।

वर्षभर चलायमान इस आजादी के विभिन्न कार्यक्रम में कुल 3207 किसान, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सुपरवाईजर तथा अन्य लाभांवित हुए।

जल शक्ति अभियान

संस्था प्रमुख डॉ. आर.पी. शर्मा के मार्गदर्शन वर्षभर जलशक्ति अभियान के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम संस्थागत तथा असंस्थागत लाये गयें। डॉ. डी.एस. तोमर ने अभियान के मुख्य उद्देश्य को बताया तथा बलराम तालास के बारे में विस्तृत से बताया।

डॉ. एस.के. कौशिक ने कम पानी में अधिक उपज देने वाली किस्मों के बारे में बताया। डॉ. रेखा तिवारी ने पोषक वाटिका में कम पानी में अधिक उपज देने वाली तकनीकों के बारे में बताया। श्री डी.के. सूर्यवंशी ने वर्षा जल संग्रहण के बारे में बताया। डॉ. मोनी सिंह ने व श्री राजेन्द्र गवली ने जल संसाधन के उचित प्रबंधन के बारे में बताया। श्रीमती गजाला खान ने जल शक्ति के अन्तर्गत कम पानी में उचित फसल बोने हेतु विभिन्न वाटसेप के माध्यम से किसानों को अवगत कराया।

किसान मेले का भव्य आयोजन

किसानों के हितार्थ हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कृषि विज्ञान केन्द्र (रा.वि.सि.कृ.वि.वि.) उज्जैन द्वारा डॉ. आर.पी. शर्मा संस्था प्रमुख के दिशा निर्देश द्वारा दिनांक 26.4.2022 को खरीफ पूर्व भव्य किसान मेले का आयोजन संपन्न हुआ।

मेले की मुख्य चार थीम जिसमें :-

1. भारतीय कृषि पद्धति पर किसान वैज्ञानिक संवाद।
2. मक्का, तिलहन और जैव फोर्टिफाईड फसलों पर तकनीकी चर्चा ।
3. प्राकृतिक खेती पर परिचर्चा।
4. कृषि प्रदर्शनी का आयोजन आदि थीम कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती देवी को माल्यापर्ण एवं दीप प्रज्वलन पश्चात किया गया।

श्री पारस जैन (विधायक उज्जैन उत्तर), श्री बहादुरसिंह बोरमुण्डला (पूर्व मण्डी अध्यक्ष), श्री किशोर शर्मा (कृषि स्थाई समिति) तथा श्री शांतिलाल धबाई (पूर्व विधायक, बड़नगर) द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। श्री पारस जैन द्वारा किसानों के हित र्थ तथा आय दुगुनी करने हेतु खेती किसानी में बदलाव करने की बात कहीं साथ ही प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर जोर दिया। श्री बोरमुण्डला जी तथा श्री शर्मा जी द्वारा किसानों को नवीनतम व फोर्टीफाईड किस्मों का चुनाव करने हेतु प्रेरित किया।

कार्यक्रम के दौरान माननीय मंचासिनों द्वारा एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किया गया ''प्राकृतिक खेती'' फोल्डर का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. डी.एस. तोमर, डॉ. एस.के. कौशिक, डॉ. रेखा तिवारी, श्री डी.के. सूर्यवंशी द्वारा विषयानुसार किसानों को जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम में श्रीमती गजाला खान, श्री राजेन्द्र गवली तथा श्री अजय गुप्ता एवं द्वारा विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। उज्जैन जिले के कुल 302 किसान भाई तथा बहने कार्यक्रम लाभांवित हुए । कार्यक्रम में श्री आर.पी.एस. नायक (उपसंचालक - कृषि एवं कल्याण विभाग) श्री सुभाष श्रीवास्तव (उद्यानिकी विभाग) तथा श्री कारूलाल जी जमरा (आत्मा परियोजना, उज्जैन) उपस्थिति उल्लेखनीय थी।

33 वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति का वर्चुअल मोड़ द्वारा आयोजन

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु किसानों की आय दुगुनी करने हेतु प्राकृतिक खेती ही एक ऐसा माध्यम है जिससे केवल मृदा का स्वास्थ ठीक नहीं होता बल्कि पर्यावरण को भी दूषित होने से बचाया जा सकता है। उक्त उदगार डॉ. एस.आर.के. सिंह निदेशक-अटारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा व्यक्त किये गये डॉ. सिंह रा.वि.सि.कृषि विज्ञान केन्द्र, उज्जैन की 33 वीं वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति में दि. 20.6.2022 को मुख्य अतिथि की आषंदि से व्यक्त किये। कार्यक्रम में प्रारंभ में डॉ. आर.पी. शर्मा प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख द्वारा सभी सदस्यों को वैज्ञानिक परामर्शदात्री समिति के बारे में विस्तार से बताया गया तथा सभी महानुभावों का स्वागत किया गया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा दी गई। डॉ. डी. एस. तोमर वरिष्ठ वैज्ञानिक द्वारा विगत छ: माह का प्रगति प्रतिवदेन तथा आगामी खरीफ मौसम की तकनीकी कार्यमाला का प्रस्तुतिकरण पॉवर पाईंट के माध्यम से दिया गया। तत्पश्चात् ऑनलाईन जुड़े हुए सभी मान्यवरों से सुझाव आमंत्रित किये गये जिसमें किसान श्री सतीश शर्मा ग्राम बिछड़ौद द्वारा फसल विविधिकरण को बढ़ावा देने का सुझाव दिया। ग्राम दताना ये जुड़े किसान श्री इंदरसिंह जादौन ने जल संरक्षण से संबंधित किसान हितों में कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया। संचालक विस्तार सेवाएं रा.वि.सि.कृ.वि.वि. ग्वालियर से नामित डॉ. आसवानी द्वारा उद्यानिकी फसलों को बढ़ावा देने पर जोर दिया तथा कहा कि बिना उद्यानिकी के कृषकों की आय नहीं बढ़ाई जा सकती साथ ही आपने कहा कि किसानों के उत्पादों को विक्रय हेतु कृषि वैज्ञानिकों को भूमिका निभानी चाहिए। डॉ. शरद चौधरी, अधिष्ठाता, कृषि महाविद्यालय इंदौर द्वारा कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की तथा आगामी कार्यक्रम को इसी तरह सफल बनाने की कामना की। श्री आर.पी.एस. नायक, उपसंचालक कृषि एवं कल्याण विभाग उज्जैन द्वारा प्राकृतिक खेती पर प्रयोग केन्द्र के फसल संग्रहालय में लगाने का सुझाव दिया ताकि जिले के विभिन्न तहसीलों के कृषक देखाकर प्रेरित सकें। श्री पी.सी. सिसौदिया जी द्वारा फसल अवशिष्ट को नरवाई प्रबंधन के द्वारा मृदा उर्वरता को बढ़ावा मिले। इसमें समन्वयता से कार्यक्रम आयोजित करने का सुझाव दिया।

कार्यक्रम को लिपिबद्ध संकलन डॉ. रेखा तिवारी, श्री राजेन्द्र गवली एवं श्रीमती सपना सिंह द्वारा किया गया। श्रीमती गजाला खान द्वारा वर्चुअल मीटिंग का पंजीयन तथा तकनीकी सहयोग निर्बाध किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. मौनी सिंह तथा आभार प्रदर्शन डॉ. एस.के. कौशिक द्वारा किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री डी.के. सूर्यवंशी वैज्ञानिक तथा श्री अजय गुप्ता एवं अन्य कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के अधिकारी व प्रगतिशील किसान एवं महिला कृषक कुल 37 लोग ऑनलाईन जुड़े।

सोयाबीन की फसल में समन्वित कीट प्रबंधन

सोयाबीन की फसल में समेकित कीट प्रबंधन के लिए निम्न उपाय अपनाएँ :-

1. ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करे, जिसमे भूमि में छिपे कीटों की विभिन्न अवस्थाएँ, बीमारियों के जीवाणु एवं खरपतवार के बीज नष्ट हो जाते हैं।

2. क्षेत्र के लिए अनुसंसित किस्मों का चयन करें। जिससे कीटों का प्रकोप भी कम होगा।

3. संतुलित पोषक तत्वों का प्रयोग आवश्यक है, नत्रजन युक्त उर्वरकों के अधिक उपयोग से चक्र भृंग एवं पत्ती खाने वाले कीटों का प्रकोप अधिक होता है। पोटाश पौधों को कीटों के प्रति प्रतिरोधक प्रदान करता है।

4. उचित बीज मात्रा का प्रयोग करें, फसल घनी होने से कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः उपज में भी प्रतिकूल असर होता है।

5. प्रकाश प्रपंच का उपयोग करना चहिए जिससे नर कीट आकर्षित होते हैं, इससे आने वाले दिनों में आक्रमण करने वाले कीटों की सम्भावना पता चलती है।

6. पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से जैविक कीटनाशको का उपयोग करना चाहिए। जैसे एन.पी.व्ही. वैवेरिया बैसियाना, बायोसोफ्ट।

7. सफेद मक्खी के लिए पीले रंग की तख्ती एवं थ्रिप्स के लिए नीले रंग की तखती पर ग्रीस लगाकर उपयोग करना चाहिए।

8. खेत में पक्षियों के बैठने के लिये टी आकार की खूटियों का प्रयोग करें।

9.रासायनिक कीटनाशकों का तभी प्रयोग करे जब उसकी लागत से अधिक आर्थिक लाभ होने की सम्भावना हो। अनुशंसित रसायनों में से किसी एक का प्रयोग करें।

तना मक्खी/सफेद मक्खी :- थायोमिथाक्सम 25 डबल्यूजी 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

नीला भृंग एवं गर्डल बीटल :- क्विनालफॉस 25 ईसी 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। ट्राइजोफॉस 40 ईसी 800 मि.ली. से 1 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। थायोक्लोप्रिड 650 मि.ली. प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

पत्ती खाने वाली इल्लीयाँ :- रेनेक्सी पायर 20 एस सी 100 ग्राम प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। क्विनालफॉस 25 ईसी 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। ट्राइजोफॉस 40 ईसी 800 मि.ली. से 1 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

चने की इल्ली :- इंडोक्सार्ब 300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें। लेम्डा साईहेलोथ्रिन 300 मि.ली. प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

लाल मक्ड़ी :- इथियोन 50 ईसी 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।

जुलाई माह में किये जाने वाले कृषि कार्य

- वर्षा के अनियमितता के कारण रिज-फरो, रेज्ड बेड तथा ब्राड बेड फरो पद्धति से सोयाबीन की बुवाई करें
- फसल विविधीकरण के अन्तर्गत सोयाबीन के साथ अन्य फसले उडद, मूंग, अरहर एवं मक्का आदि को प्राथमिकता दें।
- फसलों के बीजों को बुवाई पूर्व 2 ग्राम थारम + 1ग्राम कार्बेन्डिज्म अथवा 5 ग्राम ट्राईकोडर्मा वीर्डी कल्चर प्रति किलो बीज के मान से उपचारित करें तत्पश्चात संबंधित फसल को क्रमशः 5 ग्राम राइजोबियम कल्चर तथा 5 ग्राम पी-एस-बी कल्चर प्रतिकिलो बीज की दर से उपचारित करें।
- फसलों में डोरा या व्हील हो के म ाध्यम से अन्तरसस्य क्रियाएँ करके नमी का संरक्षण करें।
- खरपतवार नाशी दवाओं का उपयोग सोयाबीन फसल में 15-20 दिन की अवस्था में सुनिश्चित करें।
- बारिश में पशुओं को सूखे स्थान पर बांधे तथा पशुओं की नांद की साफ सफाई अवश्य करवायें।

अगस्त माह में किये जाने वाले कृषि कार्य

- देर से बोई गई मक्के की फसल में मांजरे (फूल) निकलते समय नत्रजन की शेष मात्रा देवें तथा पौधों पर मिट्टी चढ़ा दें एवं आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- खेतों में ढाल वाले स्थान पर तालाब बनाकर वर्षाजल को संग्रहित करें।
- पपीते में तना सडनकी रोकथाम हेतू बो र्डो मिश्रण का छिडकाव 10 दिन के अंतराल पर करें।
- सोयाबीन में हरी अर्द्ध कुण्डलक, चक्रभ्रंग कीट के निमंत्रण हेतु ट्रायजोफॉस 800 एम.एल. प्रति हेक्टेयर का छिड़काव करें।
- पशुओं की नांद में सप्ताह में दो बार चूना अवश्य डालें।

सितम्बर माह में किये जाने वाले कृषि कार्य

- सोयाबीन, मूंग, उड़द आदि फसल की कटाई आवश्यकतानुसार सुनिश्चित करें।
- सिंचित कृषि परिस्थिति में अगेती मटर (अर्किल) व आलू की बुवाई सितम्बर के द्वितीय पखवाड़े में करें।
- आलू कंदो को बुवाई पूर्व बोरिक एसिड 3 प्रतिशत (3किलोग्राम/100 लीटर पानी) के घोल में 30 मिनट तक उपचारित कर छाया में सूखा लेवें।
- पत्ता गोभी, फूल गोभी व टमाटर आदि की पौध तैयार करें।
- पशुओं को कृमि नाशक दवा पिलाए।
- नींबू वर्गीय फल वृक्षों में कैंकर रोग की रोकथम करें।

संपर्क सूत्र-कृषि विज्ञान केन्द्र रा.वि.रा.सि.कृ.वि.वि.

विक्रम नगर रेल्वे स्टेशन के सामने, उज्जैन (म.प्र.) दूरभाष : 0734-2922071

Book Post

To, ______________________

____

____

From
Programme Co-Ordinator
Krishi Vigyan Kendra
Near Vikram Nagar Rly. Station,
Ujjain (M.P.) 465010